डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज
बारा चकिया

B. A. Part - 2
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper - IV

Date :- 02-02-2021

'अजातशत्रु' का पात्र-योजना

पात्र-योजना के संदर्भ में विचार करते हुए यह तथ्य आवश्यक माना जाता है कि किसी भी नाटक में इतने पात्र नहीं होने चाहिए कि दर्शकों को उसके नाम भी याद न हो सके। इस नाटक में स्त्री एवं पुरुष पात्रों की संख्या लगभग ३० तक पहुँच गई है। इतने अधिक पात्र होने के कारण उन के चारित्रिक विकास में बाधा उत्पन्न हुई है।

प्रस्तुत नाटक में सत् पात्र वे हैं जिनके चरित्र में अवगुणों के अपेक्षा सद्गुणों की प्रधानता है। जैसे- मल्लिका, वासवी, गौतम, बिंबसार, बंधुल आदि। इसके विपरीत असद् पात्र वे हैं जो निम्न प्रकार के कार्यों में संलिप्त हैं, जिनमें श्यामा, छलना, देवदत्त और विरुद्धक सम्मलित हैं। प्रसाद जी ने कुछ पात्रों में हृदय परिवर्तन को भी दिखाया है जैसे अजातशत्रु अपने द्वारा किये गए दुर्व्यवहार के लिए अपने माता-पिता से क्षमा माँग लेता है; यही कार्य विरुद्धक भी दोहराता है और श्यामा अन्ततः बौद्ध-भिक्षुओं की शरण में चली जाती है।

'अजातशत्रु' हो या अन्य नाटक प्रसाद जी का नारी पात्रों के चरित्रांकन

में विशेष झुकाव है। इसी तथ्य को स्वीकारते हुए जयनाथ नलिन ने कहा है - "प्रसाद जी ने अपने हृदय की समस्त कोमलता, कल्पना की रंगीनी, भावना की स्निग्धता और कला की सफलता नारी चरित्रों के निर्माण में प्रस्तुत की है। पुरुष बुद्धि, कठोरता, वीरता और कर्म के प्रतीक है तो नारी भावुकता, भावना, सेवा, त्याग, मर्यादा, धैर्य्या और आत्माभिमान की प्रतिमाएँ है। प्रसाद की कवि-तूलिका ने नारी के अत्यन्त मनोहर चित्र उतारे हैं।" इस प्रकार समग्र विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि आलोच्य नाटक पात्र-योजना की दृष्टि से सफल नाटक है।